आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 12 रोहतक 21 अगस्त, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

त्रिकालदर्शी हमारा प्राणप्रिय ईश्वर

❑ मनमोहन कुमार आर्य

हम अल्पज्ञ जीवात्मा हैं, इस कारण हमारा ज्ञान अल्प होता है। ईश्वर जिसने इस सृष्टि को बनाया व इसका संचालन कर रहा है, वह हमारी तरह अल्पज्ञ नहीं अपितु सर्वज्ञ है। सर्वज्ञ का अर्थ होता है कि जिसे सब प्रकार का पूर्ण ज्ञान हो। जो अतीत के बारे में भी जानता हो, वर्तमान के बारे में भी और जीवों के कर्मों की अपेक्षा से भविष्य के विषय में भी ज्ञान रखता हो। अब यह कहा जा सकता है कि ईश्वर आंखों से दिखाई तो देता नहीं फिर उसकी सत्ता और उसे सर्वज्ञ कैसे मान सकते हैं ? इस पर यह जानना उचित होगा कि क्या हम स्वयं व अपने निकटस्थ परिवार जनों व मित्रों आदि को देख पाते हैं ? उत्तर हां में मिलता है। हमारा कहना है कि हम जो देखते हैं वह मनुष्यों का भौतिक शरीर होता है। हमारे पारिवारिक जन व मित्र आदि भौतिक शरीर नहीं है अपितु एक चेतन तत्व 'जीवात्मा' है। जीवात्मा एक अति सूक्ष्म तत्व है जो सूक्ष्म होने के कारण आंखों से दिखाई नहीं देता। जब हम अपनी व दूसरों की 'सत्य पदार्थ' जीवात्माओं को ही नहीं देख पाते तो फिर जीवात्मा से भी अत्यन्त सूक्ष्म व निराकार तत्व ईश्वर को न देख पाने के कारण उसके अस्तित्व से इनकार करना बुद्धिमत्ता नहीं है। हां, ईश्वर को, उसके गुण, कर्म, स्वभाव व उसकी कृति 'सृष्टि' को देखकर जाना जा सकता है। उसको जानने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। ज्ञान के साथ हमें पूर्वाग्रहों, जो हमने इस जन्म व पूर्व जन्मों से अपने चित्त में धारण किये हुए हैं, उनसे मुक्त भी होना पड़ेगा। ईश्वर व सृष्टि विषयक समस्त आवश्यक ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में 'चार वेद' के रूप में हमें प्रदान किया था। यह चारों वेद और इनका ज्ञान आज भी हमारे पूर्वजों के पुरुषार्थ के कारण हमें उपलब्ध है जिनकी सहायता से ईश्वर को जाना जा सकता है। दूसरा साधन वेदों के आधार पर महर्षि दयानन्द द्वारा लिखा गया ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' भी ईश्वर, जीव व प्रकृति के ज्ञान में सहायक है। अन्य अनेक ग्रन्थ यथा–उपनिषद्, दर्शन आदि भी सहायक हैं। सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ में वेदों के सिद्धान्तों को बहुत ही सरल रूप में बोलचाल की भाषा आर्यभाषा हिन्दी में समझाया गया है। सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ईश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान इसके पाठक को हो जाता है व हमने भी किया है।

वेदों के आधार पर महर्षि दयानन्द जी ने बताया है कि ईश्वर की जिसके ब्रह्म, परमात्मादि नाम हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है, जिसके गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र है, जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान्, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य-न्याय से फलदाता आदि लक्षणयुक्त है, उसका ऐसा ही स्वरूप वेदों में वर्णित है। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द ने यह सिद्धान्त भी बताया है कि रचना को देखकर रचयिता का ज्ञान होता है। इस सिद्धान्त से सृष्टि की रचना को देखकर इसके रचयिता 'ईश्वर' का ज्ञान होता है। इसके अतिरिक्त सभी अपौरुषेय कार्य जिसमें एक सुन्दर व मनमोहक फूल भी होता है, अपने रचयिता ईश्वर का परिचय दे रहा होता है। यह ऐसा ही है जैसे कि किसी बच्चे को देखकर उसके माता-पिता तथा धुवें को देखकर अग्नि का ज्ञान होता है। ईश्वर के बारे में विस्तार से जानने के लिए उपनिषद्, दर्शन तथा वेद आदि का अध्ययन करना अपेक्षित है।

अब ईश्वर के त्रिकालदर्शी होने पर विचार करते हैं। त्रिकाल भूत, वर्तमान तथा भविष्य काल को कहते हैं। भूत जो बीत गया है तथा वर्तमान जो अब, इस समय का काल है। इनका पूरा पूरा ज्ञान ईश्वर को होता है। इसका अर्थ है कि सृष्टि विषय व जीवों के अतीत व वर्तमान के सभी कर्मों का पूरा-पूरा ज्ञान ईश्वर को सदा सर्वदा रहता है। अब तीसरा भविष्य काल है। इसके भी दो भाग किये जा सकते हैं। एक तो जीवात्माओं के भविष्य में किये जाने वाले कर्म हैं। दूसरा इससे भिन्न सृष्टि के निर्माण व संचालन आदि ईश्वरीय कार्य हैं, इनका पूरा-पूरा ज्ञान ईश्वर को रहता है कि उसे कब क्या करना है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और उनका फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था में परतन्त्र हैं। अतः परमात्मा जीवों के भविष्य के कर्मों को पूर्व ही नहीं जानता, कर्म करने पर साथ-साथ जानता है। शनैः-शनैः वर्तमान भूतकाल में बदलता रहता है और भविष्य वर्तमान बनता जाता है। भविष्य के वर्तमान होने के साथ ईश्वर को जीवों के कर्मों का साथ-साथ ज्ञान होता जाता है। इसी को जीवों के कर्मों की अपेक्षा से

क्रमशः पृष्ठ 7 पर...

दयानन्दमठ रोहतक में शान्तियज्ञ

रोहतक। दिनांक 14 अगस्त, 2015 को दयानन्दमठ रोहतक में प्रातः 9 बजे मास्टर रामपाल आर्य, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के 35 वर्षीय सुपुत्र श्री शिवकुमार दहिया के आकस्मिक निधन के संदर्भ में शान्तियज्ञ का आयोजन हुआ। यज्ञ का सम्पादन आचार्य विदेह योगी, कुरुक्षेत्र ने किया। सभा का संचालन आचार्य योगेन्द्र आर्य ने किया।

इस अवसर पर समाजसेवी श्री प्रदीप नांदल गांव बोहर, महात्मा वेदपाल, आचार्य विजयपाल प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री ओममुनि परोपकारिणी सभा अजमेर, आचार्य सोमदेव, स्वामी धर्मदेव, आचार्य राजेन्द्र, आचार्य आत्मप्रकाश, आचार्य आजाद आर्य, आचार्य यशपाल सभा उपप्रधान, श्री सत्यवीर शास्त्री पूर्व सभामन्त्री, श्री कन्हैयालाल आर्य सभा कोषाध्यक्ष, श्री धर्मवीर शास्त्री, बहन सुमित्रा आर्या, हरियाणा अध्यापक संघ अध्यक्ष जरनैल सिंह, श्री विनय आर्य एवं डॉ. धर्मपाल आर्य दिल्ली, डॉ. राजपाल, आचार्य ऋषिपाल, श्री सुखवीर शास्त्री, आचार्य अभय आर्य, आदि विद्वानों ने अपना शोक व्यक्त किया। सभी ने मास्टर रामपाल आर्य के धैर्य की प्रशंसा की। सभी ने ईश्वर से प्रार्थना की कि मास्टर रामपाल आर्य का धैर्य बढ़ाए और वे पूर्ववत् समाज की सेवा करते रहें। अन्त में आचार्य बलदेव जी संरक्षक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने उपस्थित जनों को धैर्य बंधाने वाला आशीर्वाद दिया।

—आचार्य विजयपाल, सभाप्रधान

हमारे देश में गोमाता की सुरक्षा की आवश्यकता क्यों? एक विचारणीय विषय

गोसंवर्धन एवं संरक्षण किये बगैर गोमाता की जय कहते-कहते गोवंश को बचाना संभव है अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब आने वाली पीढ़ी को गाय का चित्र दिखाकर यह कहना होगा कि यह कभी हमारी माता हुआ करती थी। इसलिए आओ गोमाता का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? इस पर विचार करते हैं।

गोदुग्ध और घृत का वैज्ञानिक महत्त्व

इंटरनेशनल कार्डियोलोजी कांफ्रेंस के अध्यक्ष डॉ. शान्तिलाल शाह के मत से हृदय रोगियों के लिए गाय का दूध विशेष रूप से उपयोगी है। गाय के दूध के कण सूक्ष्म और सुपाच्य होते हैं। अत: वे मस्तिष्क की सूक्ष्मतम नाड़ियों में पहुंचकर मस्तिष्क को शक्ति प्रदान करते हैं। गाय के दूध में केरोटीन (विटामिन-ए) म का पीला पदार्थ रहता है जो आंखों की ज्योति बढ़ाता है। चरकसूक्त स्थान 1.18 के अनुसार गाय का दूध जीवन शक्ति प्रदान करने वाले द्रव्यों में सर्वश्रेष्ठ है। गाय के दूध में 8 प्रतिशत प्रोटीन, 8 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट और 0.7 प्रतिशत मिनरल्ज (100 आई.यू.) मिर्टामिन ए और विटामिन बी, सी, डी एवं ई होता है। निघण्टु के अनुसार गाय का दूध रसायन, पथ्य, बलवर्धक, आयुप्रद, पुंसत्वकारक तथा त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) नाशक है।

गाय का घी खाने से कोलेस्ट्रोल नहीं बढ़ता। इसके सेवन से हृदय पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता। रूसी वैज्ञानिक शिरोविच के शोधानुसार गाय के घी में मनुष्य शरीर में पहुँचे रेडियोधर्मी-कणों का प्रभाव नष्ट करने की असीम शक्ति है। गोघृत से यज्ञ करने से ऑक्सीजन बनती है। गाय के घी को चावल के साथ मिलाकर जलाने से (यज्ञ करने से) ईथीलीन, ऑक्साइड, प्रापीलीन, ऑक्साइड और फारमेलडीहाइड नाम की गैस पैदा होती है। ईथीलीन ऑक्साइड और फारमेलडीहाइड जीवाणु रोधक है, जिनका उपयोग आप्रेशन थिएटर को कीटाणु रहित करने में आज भी होता है। प्रापीथीलीन ऑक्साइड वर्षा करने के उपयोग में आती है अर्थात् गोघृत द्वारा किए गए यज्ञ से वातावरण की शुद्धि और वर्षा होना दोनों स्वाभाविक परिणाम है। भावप्रकाश निघण्टु के अनुसार गोघृत नेत्रों के लिए हितकारी, अग्निप्रदीपक, त्रिदोष नाशक, बलवर्धक, रसायन, सुगंधयुक्त, मधुर, शीतल, सुन्दर और सब घृतों में उत्तम होता है। गो-नवनीत (मक्खन) हितकारी, कांतिवर्धक, अग्निप्रदीप महाबलकारी, वात, पित्तनाशक, रक्तशोधक, क्षय, बवासीर, लकवा एवं श्वास रोगों के लिए उत्तम होता है।

गोमूत्र एवं गोबर का वैज्ञानिक महत्त्व

गोमूत्र में ताम्र होता है जो मानव शरीर में स्वर्ण के रूप में परिवर्तित हो जाता है। स्वर्ण सर्वरोग नाशक शक्ति रखता है। स्वर्ण सभी प्रकार से विषनाशक है। गोमूत्र में ताम्र के अतिरिक्त लोहे, कैल्शियम, फास्फोरस और अन्य प्रकार के क्षार (मिनरल्ज), कार्बोनिक एसिड, पोटाश और लेक्टोज नाम के तत्त्व मिलते हैं। गोमूत्र में 24 प्रकार के लवण होते हैं, जिनके कारण गोमूत्र से निर्मित विविध प्रकार की औषधियां कई रोगों के निवारण में उपयोगी हैं।

गोमूत्र कीटनाशक होने से वातावरण को शुद्ध करता है और जमीन की उर्वरक शक्ति को बढ़ाता है। गोमूत्र त्रिदोषनाशक है किन्तु पित्त निर्माण करता है। लेकिन काली गाय का मूत्र पित्तनाशक होता है। नवयुवकों के लिए गोमूत्र शीघ्रपतन, धातु का पतलापन, कमजोरी, सुस्ती, आलस्य, सिरदर्द, क्षीण स्मरणशक्ति में बहुत उपयोगी है। पंचगव्य घृत, गोदधि, गोदुग्ध, गोमूत्र आदि से मिलकर बनता है। उसका सेवन मिर्गी, दिमागी कमजोरी, पागलपन, भयंकर पीलिया, बवासीर आदि में बहुत उपयोगी है। कैंसर जैसे दु:साध्य और उच्च रक्तचाप, दमा जैसे रोगों में गोमूत्र सेवन अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हुआ है।

इटली के प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. जी.ई. बीगेड ने गोबर के अनेक प्रयोगों द्वारा सिद्ध किया है कि गाय के ताजे गोबर से टी.बी. तथा मलेरिया के कीटाणु मर जाते हैं। आणविक विकिरण से मुक्ति पाने के लिए जापान के लोगों ने गोबर को अपनाया है। गोबर हमारी त्वचा के दाद, खाज, एग्जिमा और घाव आदि के लिए लाभदायक होता है।

सिर्फ एक गाय के गोबर से प्रतिवर्ष 4500 लीटर बायोगैस मिलती है। बायोगैस के उपयोग करने 6.80 करोड़ टन लकड़ी बच जाती है, जिसमें 14 करोड़ वृक्ष कटने से बचेंगे और देश के पर्यावरण का संरक्षण होगा। गोबर की खाद सर्वोत्तम खाद है जबकि फर्टिलाइजर से पैदा अनाज हमारी प्रतिरोधक क्षमता को लगातार कम करता जा रहा है।

एक विनम्र निवेदन

मेरे अजीज श्रद्धेय स्वर्गीय भाई राजीव दीक्षित द्वारा लिखित पुस्तक 'गोवंश पर आधारित स्वदेशी कृषि' को आप अवश्य पढ़ें। इसमें आपको आजादी से पहले स्थापित उस सिस्टम का पता चलेगा जिसके द्वारा भारत के किसान व उद्योगपति एवं आम आदमी आज भी विदेशियों के पूर्णतया गुलाम है और हमारे देश के एम.पी. बिकाऊ किस प्रकार हैं?

—गंगाशरण आर्य 'साहित्य सुमन'
चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला, ग्राम-शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61, मो० 9871644195

वेदप्रचार मण्डल हिसार की ओर से विश्वशान्ति महायज्ञ का आयोजन

वेदप्रचार मण्डल हिसार के तत्त्वावधान में 7-8-9 अगस्त 2015 को एक क्विंटल घी से गुरुकुल आर्यनगर में तीन दिवसीय विश्वशान्ति महायज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री थे तथा गुरुकुल के छह छात्रों ने वेदपाठ किया। तीन दिवस यज्ञ में शहर के गणमान्य निम्न यजमान दम्पतियों ने यजमान का स्थान ग्रहण किया तथा यज्ञोपवीत धारण किया, जिनमें अशोक गुट, ईश्वरसिंह आर्य, अशोक सिंहमार, प्रधान रामकुमार आर्य, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, भूपेन्द्र गंगवा, रामनिवास आर्य, बहादुरसिंह, वेदप्रकाश, प्रेमसिंह, धर्मपाल शास्त्री, जयकरण आर्य, दयानन्द आर्य, महेन्द्रसिंह आर्य, रणधीरसिंह पनिहार चक्क, रामनिवास, योगेश आदि यजमान बने।

निम्न विद्वान् वक्ताओं ने सारगर्भित विचार रखे-स्वामी सर्वदानन्द जी का आध्यात्मिक प्रवचन हुआ। आचार्य सानन्द अजमेर ने बताया कि आत्मा को शरीर से अलग मान लो तथा संध्या-हवन को अपने जीवन से जोड़ लो। आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री ने तीन दिन तक मंच संचालन तथा ईश्वर-जीव-प्रकृति त्रैतवाद की सुन्दर व्याख्या की। आचार्य डॉ० प्रमोद योगार्थी मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष ने यज्ञ के लाभ तथा यज्ञ में मनुष्य जीवन के महत्त्व पर प्रकाश डाला। यज्ञ को संगठन का प्रतीक तथा पर्यावरण को शुद्ध करने वाला बताया। महात्मा अत्तरसिंह स्नेही ने महर्षि दयानन्द के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला और मण्डल के कार्यक्रमों पर प्रकाश डाला। अन्त में कहा कि आर्यसमाज के नेताओं को इकट्ठा होकर शराबबन्दी आन्दोलन चलाना चाहिए। आजादसिंह पाठक ने गुरुकुलीय शिक्षा पर जोर दिया तथा वेदप्रचार मण्डल की गतिविधियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। बेटी कल्याणी के तीनों दिन ईश्वरभक्ति व समाज सुधार के शिक्षाप्रद भजन हुए। श्री सूर्यदेव वेदांशु के महिलाओं के उत्थान के शिक्षाप्रद भजन हुये। वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य ने आत्मा परमात्मा पर तथा गायत्री मंत्र की सरल शब्दों में व्याख्या की। अन्त में सभी विद्वानों तथा यज्ञ में पधारे सभी नर-नारियों का धन्यवाद किया।

इस शान्ति महायज्ञ में पधारने वाले प्रमुख व्यक्ति पं० रामजीलाल आर्य पूर्व सांसद, चौ० युद्धवीर सिंह जांडवाला, ब्र० दीपकुमार आर्य, निहालसिंह आर्य पूर्व इंस्पेक्टर, कर्नल ओमप्रकाश आर्य, लालबहादुर एडवोकेट, सीताराम आर्य, महेन्द्र आर्य, मेजन करतार सिंह आर्य, निहाल सिंह दांगी, आर.एस. चुग, स्त्री आर्यसमाज की प्रधाना छन्नोदेवी ठकराल हिसार से कई महिलाओं के साथ पधारी, सेठ सत्यप्रकाश मित्तल, डॉ० बलवन्त सिंह आर्य, सीताराम बेरवाल, सेठ बंसीधर आर्य, राजेन्द्र आर्य, बलराज आर्य आदि के अतिरिक्त काफी संख्या में लोगों ने भाग लिया। सबने ऋषिलंगर में भोजन किया।

—रणधीरसिंह शास्त्री, गुरुकुल आर्यनगर (हिसार)

बृहद् यज्ञ व वेदोपदेश सम्पन्न

दिनांक 2 अगस्त 2015 को महम जिला रोहतक में वेदप्रचार का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्यजगत् के वैदिक विद्वान् आचार्य वेदमित्र जी, पतञ्जलि योगाश्रम भऊ रोहतक के सान्निध्य में प्रथम बृहद् यज्ञ किया गया। यज्ञोपरान्त आचार्य जी ने विद्या के भौतिक पक्ष और आध्यात्मिक पक्ष पर अपने विचार रखे। बिना आध्यात्म के पाश्चात्य जगत् के रिसर्चवेत्ता, यौन-दुराचार, मांस-भक्षण तथा नशे के चक्कर में फंसे दिखे हैं। आत्म-बोध शिक्षण युवावस्था से पूर्व आचार्य बालकों में भर देते थे। कार्यक्रम का सुन्दर आयोजन श्री राजवीर ग्रेवाल व श्री दयानन्द आर्य ने किया।

ओ३म्

उपासक का सामाजिक जीवन

-: वेद-मन्त्र :-

उदु त्ये मधुमत्तमा गिर स्तोमासः ईरते।
सत्राजितो धनसा अक्षितोतयो वाजन्यन्तो रजा इव॥

(साम० 9/251)

शब्दार्थः=(त्ये) वे, (स्तोमासः) स्तुति करने वाले होते हैं निश्चय से (मधुमत्तमाः) अत्यन्त मधुर (गिरः) बाणियों को (उदीरते) उच्चारण करते हैं (स्त्राजितः) क्रोध को जीतते हैं (धनसा) दीनों को दान देते हैं (अक्षितोतयः) शरणागतों का नाश नहीं होने देते हैं (वाजयन्तः) प्रभु की अर्चना करते हैं (रथा इव) प्रसन्नता अनुभव करने वाले रथी के समान हर्षपूर्वक आगे बढ़ते हैं।

भावार्थः=प्रभु का सच्चा उपासक बनूँ। मेरे में सदैव माधुर्य बना रहे।

व्याख्या=जीवन यात्रा में सफल होने के लिये सामाजिक जीवन का उत्तम होना अत्यन्त आवश्यक है। वाणी की मधुरता ही सामाजिक जीवन की उत्तमता का साधन है। उपासक का वाणी पर संयम हो जाता है। दूसरा व्यक्ति क्रोधित हो जाता है तो भी वह उपासक मधुर वाणी का ही उच्चारण करता है। उसके मुख से कटु शब्द का उच्चारण शायद ही कभी होता हो। भक्त सदैव दूसरे की स्तुति करता है। किसी की निन्दा नहीं करता। वे दीनों को दान देने में प्रसन्नता अनुभव करता है। जहर देने वाले तथा हत्यारे को भी क्षमा दान देता है। इसीलिये जब तक सूर्य और चन्द्रमा रहते हैं उसका नाम भी अमिट रहता है। जीवन प्राप्त करके दो ही कार्य करने योग्य हैं। वेदज्ञान की प्राप्ति और तदनुसार जीवन। यही कार्य सामाजिक जीवन को सफल बनाता है। उपासक ही इस कठिनतम कार्य में सफल होता है। सामाजिक उत्तम जीवन ही मनुष्य को चमकाता है। यश प्रदान करता है। जीवन को सुगन्धित तथा अनुकरणीय बनाता है। इसके लिये '**ईश्वरप्रणिधानद्वा**' का पालन करें। '**अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में। है जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में॥**' इस पद्य को सदैव बोलता रहे तथा तदनुसार चलता रहे। आर्यसमाज क्रान्तिकारी संस्था है। आन्दोलन का नाम ही आर्यसमाज है। राष्ट्रमण्डल के खेलों में गोमांस का बन्द कराया। संस्कृत आन्दोलन तथा गोसेवा आयोग बनाने का आन्दोलन आदि सभी आन्दोलन ईश विश्वास पर सफल हुये। करौंथा आन्दोलन तो पहाड़ के साथ टक्कर मारने के समान था। इस कठिनतम कार्य में भी ईश्वर ने सफलता प्राप्त कराई। यह उस महान् देव की महती कृपा का फल है।

पढ़िये—

मन, वचन, कर्म से एक होना सफलता पैर चूमेगी।
अधिक न बोले डोलेगा तो भी दुनिया चौतरफा झूमेगी॥
होगा जगत् में रोशन यही तो तू चाहता है।
बैठेगा गोद में उसकी जिसको तू रोज गाता है॥
न होगी तनिक भी हानि पर-पीड़ा में जो कूदेगा।
स्वार्थ आ गया किञ्चित् बीच मझधार डूबेगा॥

—आचार्य बलदेव

सार्वजनिक अभिनन्दन

आर्यजगत् को यह जानकर हर्ष एवं प्रसन्नता होगी कि श्री आचार्य देवव्रत जी को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल बनने पर दिनांक 29 अगस्त 2015 को प्रातः 9 बजे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सार्वजनिक अभिनन्दन किया जा रहा है। इस अभिनन्दन समारोह में माननीय श्री मनोहरलाल खट्टर, मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार भी पधार रहे हैं।

अतः सभी आर्य सज्जनों से प्रार्थना है कि 29 अगस्त 2015 को प्रातः 9 बजे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अधिक से अधिक संख्या में पहुँचें।

—रामपाल आर्य, सभामन्त्री

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

चतुर्थ समुल्लास के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न 276. कौन-से स्त्री-पुरुष गृहस्थाश्रम में प्रवेश करें?

उत्तर-जब यथावत् ब्रह्मचर्य आचार्यानुकूल वर्तकर, धर्म से चारों, तीन व दो अथवा एक वेद को सांगोपांग पढ़ के, जिसका ब्रह्मचर्य खण्डित न हुआ हो, वह पुरुष वा स्त्री गुरु की आज्ञा ले, समावर्तन संस्कार करा गुरुकुल से आकर गृहाश्रम में प्रवेश करे।

कन्हैयालाल जी आर्य

प्रश्न 277. कैसी कन्या से विवाह करें, कैसी से न करें?

उत्तर-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने वर्णानुकूल सुन्दर लक्षणयुक्त कन्या से विवाह करें। जो कन्या माता के कुल की 6 पीढ़ियों में न हो और पिता के गोत्र की न हो तो उस कन्या से विवाह करना उचित है। शूद्र भी 6 पीढ़ी और गोत्र छोड़कर सवर्ण कन्या से विवाह करे।

प्रश्न 278. निकट और दूर विवाह करने के गुण-दोष क्या हैं?

उत्तर-(1) **एक**-जो बालक बाल्यावस्था से निकट रहते, परस्पर क्रीडा, लड़ाई और प्रेम करते, एक-दूसरे के गुण-दोष स्वभाव, बाल्यावस्था के विपरीत आचरण जानते और नंगे भी एक-दूसरे को देखते आए हैं, उनका परस्पर विवाह होने से प्रेम कभी नहीं हो सकेगा।

(2) **दूसरा**-जैसे पानी में पानी मिलने से विलक्षण गुण नहीं होता, वैसे एक गोत्र के पितृ वा मातृकुल में विवाह होने में धातुओं के अदल-बदल नहीं होने से उन्नति नहीं होती।

(3) **तीसरा**-जैसे दूध में मिश्री या शुण्ठ्यादि औषधियों के योग होने से उत्तमता होती है वैसे ही भिन्न गोत्र के मातृ-पितृ कुल से पृथक् वर्तमान स्त्री-पुरुषों का विवाह होना उत्तम है।

(4) **चौथा**-जैसे एक देश में जो रोगी हो, वह दूसरे देश में वायु और खान-पान के बदलने से रोगरहित होता है, वैसे ही दूर देशस्थों के विवाह होने में उत्तमता है।

(5) **पांचवां**-निकट सम्बन्ध करने से एक-दूसरे के निकट होने में सुख-दुःख का भान और विरोध होना भी संभव है। दूर देशस्थों के विवाह में दूर-दूर प्रेम की डोरी लम्बी बढ़ जाती है, निकटस्थ विवाह में नहीं।

(6) **छठा**-दूर-दूर देश में रहने और दूर का सम्बन्ध होने से पदार्थों की प्राप्ति भी सहजता से हो सकती है, निकट विवाह होने से नहीं।

(7) **सातवां**-कन्या के पितृकुल में दारिद्र्य होने का भी संभव है, क्योंकि जब-जब कन्या पितृकुल में आवेगी, तब-तब इसको कुछ न कुछ देना ही पड़ेगा।

(8) **आठवां**-कोई निकट होने से एक-दूसरे को अपने-अपने पितृकुल के सहाय का घमण्ड और जब कुछ भी दोनों में वैमनस्य होगा, तब स्त्री झट ही पिता कुल में चली जाएगी। एक-दूसरे की निन्दा अधिक होगी और विरोध भी, क्योंकि प्रायः स्त्रियों का स्वभाव तीक्ष्ण और मृदु होता है।

प्रश्न 279. कन्या का नाम दुहिता क्यों है?

उत्तर-कन्या का नाम दुहिता इस कारण से है कि इसका विवाह दूर देश में होने से हितकारी होता है, निकट रहने में नहीं।

प्रश्न 280. किस कुल में विवाह नहीं करना चाहिये?

उत्तर-जो कुल सत्क्रिया से हीन, सत्पुरुषों से रहित, वेदाध्ययन से विमुख और शरीर पर बड़े-बड़े लोम वाला हो अथवा बवासीर, क्षय, दमा, खांसी, आमाशय, मिरगी, श्वेतकुष्ठ और गलित कुष्ठयुक्त कुलों की कन्या वा वर के साथ विवाह न होना चाहिए क्योंकि ये सब दुर्गुण और रोग विवाह करने वाले के कुल में भी प्रविष्ठ हो जाते हैं। इसलिए उत्तम कुल की कन्या और वर का आपस में विवाह होना चाहिए।

प्रश्न 281. कैसी आकृति वाली कन्या से विवाह करें? **उत्तर**-न पीले वर्ण वाली, न अधिकांगी अर्थात् पुरुष से लम्बी-चौड़ी, न अधिक बल वाली, न रोगयुक्ता, न लोमरहित, न बहुत लोम वाली, न बकवाद करने वाली और न भूरे नेत्र वाली और न रोगी कन्या से विवाह करें।

क्रमशः

आचार्य देवव्रत का राज्यपाल बनना वैदिक सिद्धांतों की जीत

जीन्द जिले की आर्य संस्थाओं ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत जी को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल बनाए जाने पर खुशी व्यक्त की है। साथ ही इसके लिए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, योगगुरु स्वामी रामदेव जी का और भाजपा सरकार का धन्यवाद भी किया है।

आर्य समाज रामनगर के प्रधान कर्ण सिंह आर्य और मंत्री अजीत कुमार आर्य ने आचार्य देवव्रत को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल बनाये जाने को आर्य जगत के लिए बहुत ही खुशी की खबर बताया है। उन्होंने कहा कि ये वास्तव में आर्य सिद्धांतों की जीत है। आचार्य देवव्रत जी ने गुरुकुल कुरुक्षेत्र को अपनी नेतृत्व क्षमता से ऊँचाइयों पर पहुँचाया है, उनमें गजब की प्रशासनिक क्षमता है जिसका पूरा फायदा हिमाचल प्रदेश को मिलेगा। उन्होंने इसके लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भाजपा सरकार का धन्यवाद भी किया। साथ ही योग गुरु स्वामी रामदेव के प्रयासों की भी सराहना की।

आर्य वीर दल जीन्द के मण्डलपति यज्ञवीर आर्य ने भी इसे आर्य समाज और आर्य वीरों के लिए प्रेरणा बताते हुए कहा कि आचार्य देवव्रत जी न केवल आर्यजगत् के एक सुप्रसिद्ध प्रखर वक्ता है, बल्कि उनके दिलो-दिमाग में समाज के लिए बहुत कुछ करने की चाहत है। ये वास्तव में सादगी, इन्सानियत और सामाजिकता की जीत है। आचार्य देवव्रत जी सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धांत का पालन करने वाले एवं दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति हैं। वैदिक सिद्धांतों और आदर्शों में उनकी गहरी निष्ठा है। उन्होंने अपना पूरा जीवन गुरुकुल और समाज के उत्थान के लिए एवं गाय को लोगों के हृदय में पुन: माता के रूप में स्थापित करने में लगा दिया। आर्यसमाज और आर्य वीर दल से जुड़े ऐसे व्यक्ति का इतने उच्चे पद तक पहुँचना आर्य वीरों को प्रेरणा देता है।

वेदप्रचार मंडल जींद ने भी आचार्य देवव्रत जी को राज्यपाल बनाये जाने के सरकार के कदम को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि इस प्रकार के योग्य एवं अच्छे व्यक्तियों का उच्च पदों पर पहुँचना देश के भविष्य के लिए मील का पत्थर साबित होगा। वेदप्रचार मंडल के मंत्री संजय आर्य और पूर्व मंत्री रमेश आर्य ने आचार्य देवव्रत जी के राज्यपाल बनने पर सभी को बधाई देते हुए कहा कि सम्मानित पदों पर योग्य व्यक्ति ही आदर पाते हैं। सरकार ने ये बहुत ही सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य किया है। साथ ही जिले की अन्य आर्य समाजों ने इसे आर्यसमाज का सम्मान बताया है। आर्य समाज जींद शहर के प्रधान राजबीर आर्य, आर्य समाज जींद जंक्शन के प्रधान पृथ्वी सिंह मोर, आर्य समाज सफीदों के प्रधान यादविंद्र आर्य और मंत्री संजीव मुआना, आर्य समाज किनाना के प्रधान कपूर सिंह आर्य, आर्य समाज मुआना के प्रधान राजपाल आर्य, आर्य समाज हाट के प्रधान लाजपत राय आर्य आदि ने भी इसे खुशी का समाचार बताते हुए इसके लिए सभी को बधाई दी है।

जाति-द्वेष मिटाओ सत्संग समारोह सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के तत्त्वावधान में जाति मिटाओ सत्संग समारोह का आयोजन जिला करनाल के सालवन गांव में 9 अगस्त 2015 को किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के यशस्वी प्रधान आचार्य विजयपाल जी ने की। उन्होंने बताया कि हमारा संकल्प है कि आर्यसमाज के सत्संग के माध्यम से हम जातिवाद को समाप्त करना चाहते हैं। क्योंकि हम सभी एक ही जाति से हैं-मानव जाति से। आजकल ईसाई, मुस्लिम आदि हमारे भाइयों को बहका रहे हैं और लोभ, लालच देकर धर्म परिवर्तन करवा रहे हैं। हमें उन व्यक्तियों से सावधान रहना चाहिए। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता स्वामी विदेह योगी जी थे, उन्होंने बताया कि धर्म एक वैदिक जाति एक मानव जाति, फिर क्यों एक दूसरे को ऊँचा-नीचा मानते हो। एक उदाहरण भी दिया कि एक बार रामचन्द्र देहलवी जी के साथ मौलवी का शास्त्रार्थ हुआ, मौलवी ने कहा-आपकी आर्यसमाज कहती है, रामचन्द्र जी ने कहा-मौलवी, सावधान होकर बोलो आर्यसमाज कहती नहीं, आर्यसमाज एक बहुत बड़ा संगठन है वह आर्यसमाज कहता है। कहती नहीं कहता है।

आचार्य योगेन्द्र ने कहा कि गोरक्षा और धर्म की रक्षा के लिए जगह-जगह संगठन तैयार किया जा रहा है। हर घर में एक गाय जरूर पालनी चाहिए। इससे धर्म व जाति दोनों ही सुरक्षित रहती हैं।

मंच संचालन करते हुए आचार्य अभय आर्य ने कहा कि यह हमारा दूसरा कार्यक्रम है। पहला कार्यक्रम पानीपत जिले में हुआ था और अन्य जिलों में भी इसी प्रकार के कार्यक्रम करते रहेंगे।

स्वामी दयानन्द जी ने अपनी पुस्तक 'आर्योद्देश्यरत्नमाला' में लिखा है कि जाति तो मनुष्य व पशुओं की होती है न कि मानव-मानव के अन्दर। भगत फूलसिंह जी ने अनेक बार पिछड़ा जाति के लिए संघर्ष किया।

अन्त में कार्यक्रम में पहुंचने पर सभी आगन्तुकों का धन्यवाद स्वामी प्रमानन्द जी द्वारा किया गया। इस अवसर पर भजनोपदेशक महेन्द्र आर्य, सांभली से रामकिशन, पाढा से वीरेन्द्र, दुपेड़ी से ऋषि, गांगढेरी से ओमप्रकाश, बल्ला से नरेन्द्र, अशोक, ओमप्रकाश सालवान, सुभाष, जयवीर, पवन आदि का पूरा सहयोग रहा।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मा० रामपाल आर्य थे, लेकिन पुत्र के निधन के कारण वे उपस्थित नहीं हो पाए। परन्तु उनका मार्गदर्शन मिलता रहा।

पहली बार होगा जयपुर में वैदिक वीरांगना दल

जयपुर। वैदिक वीरांगना दल द्वारा जयपुर में पहली बार एक साथ 108 लड़कियों का उपनयन-संस्कार करवाया जाएगा। 19 एवं 20 सितम्बर को आयोजित समारोह के लिए नि:शुल्क पंजीयन शुरू हो गए हैं।

वैदिक वीरांगना दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष अनामिका शर्मा ने बताया कि वैदिक परंपरा में महिलाओं को भी यज्ञोपवीत (जनेऊ) पहनने का अधिकार है। इसी परंपरा के निर्वहन में वैदिक वीरांगना दल एक साथ 108 युवतियों का उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार करवाकर उन्हें जनेऊ धारण करवाएगा। समारोह वैदिक विद्वानों व संन्यासियों के सान्निध्य में होगा। संस्कार समारोह में शामिल होने वालों के लिए आवास व भोजन की व्यवस्था पूर्णत: नि:शुल्क रहेगी।

नि:शुल्क पंजीयन के लिए वैदिक वीरांगना दल के राष्ट्रीय कार्यालय बी-123, मालवीय नगर, जयपुर पर संपर्क कर सकते हैं। संस्थान का फोन नंबर 8141-2525870 है।

—**अनामिका शर्मा,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, कार्यालय : बी-123, मालवीय नगर, जयपुर, मोबाइल : 9829665231

जिला स्तरीय प्रतियोगिता

जिला स्तरीय सामान्य ज्ञान एवं हरियाणा की सभ्यता, इतिहास व संस्कृति। भाषण, श्लोगन, प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता, जिसके प्रेषक जिला के युवा कार्यक्रम अधिकारी थे। ये प्रतियोगिता 10 अगस्त, 2015 को आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, जी.टी. रोड, पानीपत में हुई। इस प्रतियोगिता में पानीपत के 22 स्कूलों ने भाग लिया जिसमें हमारे स्कूल (आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल) की छात्रा मुस्कान ने प्रथम पोजिशन ली जो कि अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है।

इसके अलावा श्लोगन पेंटिंग कम्पटीशन, जिसमें हमारे स्कूल के पांच बच्चों ने (दीपिका, अमरकान्त, श्रुति, पंकज, नेहा) भाग लिया जिसमें हमारा स्कूल द्वितीय पोजीशन में रहा। इन बच्चों में नेहा नाम की बच्ची ने श्लोगन पेंटिंग कम्पटीशन में द्वितीय पोजीशन ली। जो अपने आप में बहुत बड़ी बात है। उन दोनों बच्चों को वहां से कैश प्राइज दिया गया। प्रथम पोजीशन को 500 और द्वितीय प्रोजीशन को 375 रु० दिये गये।

सत्यार्थप्रकाश

समाज में फैले अन्धकार, अन्धविश्वास, गुरुडमवाद, भ्रूणहत्या आदि बुराइयों को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश हरयाणा के प्रत्येक घर तक पहुंचाने का यत्न किया जाये। —आचार्य बलदेव

वेदों की ओर लौटो

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के 'वेदों की ओर लोटौ' अभियान को जन-जन की आवाज बनाकर गांव-गांव निकले आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य आचार्य योगेन्द्र जी ने वेद में श्रावणी पर्व के इस महीने में वेद स्वाध्याय व वेदों के ज्ञान का प्रचार-प्रसार का किया। इसलिए आचार्य योगेन्द्र आर्य के नेतृत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वेदप्रचार व गोरक्षा को लेकर प्रचारार्थ निकले हुए हैं। आओ हम सब मिलकर अन्धविश्वास से समाज को ज्ञान के प्रकाश की ओर लेकर चलें। जन-जन से हमारी अपील है कि 'वेदों की ओर लौटो' इस अभियान से आप जुड़िये। जुड़ने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्पर्क करें।

भगवान् आर्यों को पहली लगन लगा दे। वैदिक धर्म की खातिर मिटना इन्हें सिखा दे॥

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य आचार्य योगेन्द्र आर्य रानीला गोशाला, जिला भिवानी में वेदप्रचार करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य आचार्य योगेन्द्र आर्य गांव जेवली जिला भिवानी में वेदप्रचार करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य आचार्य योगेन्द्र आर्य गांव डीघल जिला झज्जर में वेदप्रचार करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य आचार्य योगेन्द्र आर्य गांव खेड़ीजट्ट जिला झज्जर में वेदप्रचार करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य आचार्य योगेन्द्र आर्य व श्री आजाद सिंह आर्य सभा पुस्तकाध्यक्ष गांव जुलानी जिला जीन्द में वेदप्रचार करते हुए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अन्तरंग सदस्य आचार्य योगेन्द्र आर्य गांव गोयला कलां, जिला झज्जर में वेदप्रचार करते हुए।

तीज व रक्षाबन्धन

❑ प्राचार्य अभय आर्य

जीवन यात्रा में संघर्ष करता हुआ मनुष्य बीच-बीच में सुख व आनन्द के पड़ाव तलाशता व बनाता है। पर्व भी ऐसे ही पड़ाव हैं। सावन के महीने में ऐसे ही दो पर्व हैं तीज व रक्षाबन्धन। विदा होते हुए सावन की तृतीया को ही क्यों इस पर्व के लिए चुना गया यह तो मैं नहीं जान पाया। लेकिन आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी श्रीयुत् रामचन्द्र देहलवी का तीन के विषय में एक प्रसंग याद आता है जब उन्होंने कहा था कि दौड़ आदि आरम्भ करवाते हुए तीन तक ही गिनती गिनते हैं और इससे हमारे त्रैतवाद के सिद्धान्त की सार्वभौमिक मान्यता सिद्ध होती है।

आज आर्यों द्वारा चलाये पर्वों के स्थान पर हैप्पी न्यू यीअर, फ्रेंडशिप डे, वैलेंटाइन डे आदि पाश्चात्य पर्वों का प्रचलन हो गया है। आर्यों के पर्व शरीर, मन, मस्तिष्क पर अनुकूल प्रभाव डालने वाले होते हैं। ऊँची से ऊँची टहनी पर झूला डालना, झूले के पटड़े पर खड़े होकर अकेले ही पैरों के बल पींग बढ़ाना, झूले से तालाब में छलांग लगाना।

आचार्य अभय आर्य

ऊपर-नीचे जाता हुआ झूला जीवन के उतार-चढ़ाव, सुख-दु:ख की ओर संकेत करता है तथा माताएं गीत गाकर समावस्था में रहकर यह सब सहन करने की प्रेरणा देती हैं। लोग पहले ऐसे आयोजनों में सम्मिलित होते थे, अत: उनकी प्रवृत्ति स्वाभाविक ही दु:ख-सुख सहने की होती थी तथा जीवन तनावमुक्त होता था। बहनें अपने भाई का नाम लेकर गीत गाती थीं। जिसका भाई नहीं होता तो वह पड़ोस के लड़के का नाम लेकर गीत गाती थीं। सामाजिक समरसता के लिए भी इस पर्व का महत्त्व है। वर्षा के दिनों में वायु का प्रकोप होता है। तैल वायु का विरोधी है। अत: लोग तैल से बने विभिन्न व्यंजन बनाते हैं।

वर्तमान में इस त्यौहार का स्वरूप लुप्त होगया है। पार्कों में ही कुछ लोग झूलते मिलते हैं, ऐसे लगते हैं जैसे कृत्रिम खिलौने किसी मृत परम्परा की स्मृति के चिह्न के रूप में किसी म्यूजियम में रखे गये हैं।

इसी प्रकार वर्षा ऋतु में नवीन वनस्पतियां, औषधियां, हरियाली, नयारूप धारण करती है। स्वाभाविक रूप से मनुष्यों का भी बल बढ़ता है। सावन की पूर्णिमा को हम श्रावणी पर्व मनाते हैं हम तो रक्षाबंधन को यज्ञोपवीत, व्रतबन्ध संस्कार का ही विकृत रूप मानते हैं।

यह यज्ञोपवीत ही तो रक्षा-सूत्र है, जो हमारी बुराइयों से, दुर्व्यसनों से रक्षा करता है। गण्डा-डोरा-ताबीज आदि पहनने वाले गलत खान-पान करते देखे जा सकते हैं। वैदिक रीति से यज्ञोपवीत धारण किया व्यक्ति जब ऐसे करता है तो जहां स्वयं ग्लानि महसूस करता है वहीं दूसरे लोग भी उस पर व्यंग्य कर देते हैं। अत: यही यज्ञोपवीत रक्षा का बंधन अर्थात् रक्षाबंधन है।

कात्यायनमुनि विद्यापीठ का शुभारम्भ

महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम (आनन्दधाम आश्रम), गढ़ी, ऊधमपुर (जम्मू-कश्मीर) द्वारा एक नया कीर्तिमान् स्थापित करते हुए 26 जुलाई 2015 को विधिवत् '**कात्यायनमुनि विद्यापीठ**' की स्थापना की गई जिसमें ब्र० संदीप आर्य, ब्र० लोकेन्द्र आर्य तथा ब्र० जयेन्द्र आर्य इन तीन ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार विद्यापीठ के कुलपति एवं आश्रम के संरक्षक व मुख्य निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी ने कराया। उपस्थित जनसमूह ने जम्मू कश्मीर प्रान्त में इस प्रकार का प्रथम आर्ष गुरुकुल खोले जाने पर अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त की तथा आश्रम के अधिकारियों का एवं रोजड़ (गुजरात) में शिक्षा प्राप्त आचार्य सन्दीप आर्य जी का आभार व्यक्त किया जिन्होंने अध्यापन कार्य नि:शुल्क करना स्वीकार किया। ट्रस्ट के सभी सदस्यों ने पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि का विशेष धन्यवाद किया जिनके सान्निध्य में आश्रम निरन्तर प्रगति कर रहा है। विद्यापीठ में व्याकरण, छन्द, छ: दर्शन, निरुक्त आदि वैदिक वाङ्मय का अध्यापन कार्य नि:शुल्क कराया जाएगा। विद्यापीठ में होने वाले भोजन, आवास एवं पुस्तकों आदि का व्यय आश्रम वहन करेगा तथा आचार्य जी को आश्रम एवं विद्यापीठ चलाने के सर्वाधिकार प्राप्त रहेंगे। अध्ययन के इच्छुक एवं दानदाता शीघ्र सम्पर्क करें।

आचार्य संदीप आर्य-आचार्य 09466821003
महात्मा चैतन्यमुनि-कुलपति 09418053092

योग-ध्यान-साधना शिविर

आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम), ऊधमपुर, जम्मूमें आश्रम के मुख्य संरक्षक निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 27 सितम्बर से 4 अक्तूबर 2015 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जायेंगे तथा योगदर्शन-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़ (गुजरात) के शिक्षित एवं कात्यायनमुनि विद्यापीठ के आचार्य श्री सन्दीप आर्य जी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं।

इस अवसर पर पूज्य महात्मा महात्मा जी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भांति सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाये गये शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है। अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं० 09419107788 व 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

—भारतभूषण आनन्द-प्रधान 09419107788

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

सभी समस्याओं का समाधान वेदज्ञान के अनुसार आचरण से ही संभव

आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् आचार्य ओमप्रकाश आर्य ने कहा कि वेद ईश्वरीय वाणी है और हमें सदैव वेद के उपदेश के अनुसार ही आचरण करना चाहिए। वेद के अनुसार जीवन जीने से व्यक्ति जीवन के उच्च शिखर को प्राप्त कर लेता है तथा समाज में सम्मान पाता है। वे आर्यसमाज रामनगर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय वैदिक सत्संग समारोह के पहले दिन उपस्थित श्रद्धालुओं को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा सभी समस्याओं का समाधान ईश्वरीय वाणी वेदज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा उसके अनुकूल लोगों व समाज के आचरण से ही संभव है। वेदों में मानव के जीवन के उत्थान का प्रत्येक सूत्र विद्यमान है। वेद जीवन के रहस्यों को सुलझाने वाले वैज्ञानिक ग्रथ है। उन्होंने आत्मा की आवाज को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा कि हमें अपनी आत्मा की आवाज की अवहेलना नहीं करनी चाहिए। वास्तव में ये परमपिता परमेश्वर का सन्देश देती है। हम अपनी आत्मा की आवाज को नहीं मारते, बल्कि अपने आपको मार लेते हैं।

इससे पूर्व श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए सहारनपुर से आए हुए सुप्रसिद्ध वैदिक भजनोपदेशक एवं मधुर गायक पंडित प्रताप सिंह आर्य अपने सुमधुर भजनों के माध्यम से ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना के सही तरीके के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि ईश्वर को जाने बिना जीवन व्यर्थ है और ईश्वर के सही स्वरूप को जाने बिना उसकी पूजा निरर्थक है। यदि हम आनन्द को प्राप्त करना चाहते हैं और सदा के लिए दु:खों से छुटकारा पाना चाहते हैं तो ईश्वर के सही स्वरूप को समझकर सही तरीके से पूजा करनी चाहिए।

कार्यक्रम का प्रारम्भ आचार्य ओमप्रकाश आर्य के ब्रह्मत्व में हुए वैदिक यज्ञ से हुआ। मंच सञ्चालन आर्यसमाज रामनगर के प्रचारमंत्री एवं प्रेस प्रवक्ता यज्ञवीर आर्य ने किया। शांतिपाठ और जयघोष के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। यह तीन दिवसीय वैदिक सत्संग समारोह रविवार 16 अगस्त की रात्रिकालीन सभा तक पूर्ण हुआ। इस दौरान प्रतिदिन प्रात:कालीन सभा में यज्ञ, भजन और प्रवचन का कार्यक्रम किया गया, जबकि रात्रिकालीन सभा में सुमधुर भजनों एवं वेद आधारित जीवन उपयोगी उपदेश का कार्यक्रम हुआ।

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री प्रो. ओमकुमार आर्य, आर्यसमाज रामनगर के प्रधान कर्णसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष सतनारायण आर्य, उपप्रधान सूरजमल आर्य, आर्यसमाज जीन्द शहर में पूर्व प्रधान रतनलाल आर्य, विद्यासागर शास्त्री, रणबीर आर्य, कंवर साहब आर्य, जीवनी देवी समेत अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

शोक समाचार

आर्यसमाज छानी बड़ी जिला हनुमानगढ़ (राज०) के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री नोरंगलाल आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी का निधन 4.7.2015 को 68 वर्ष की आयु में हो गया। दाह संस्कार में सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। वह अपने पीछे दो बेटे तथा एक बेटी एवं भरा पूरा परिवार छोड़ गई। श्री नोरंगलाल जी आर्य आर्यसमाज का कुछ समय गांव की गोशाला में देते हैं। शेष समय बस अड्डे पर अपनी फर्म-कुमार स्टोन कम्पनी छानी बड़ी में लगाते हैं। लक्ष्मीदेवी आर्या मधुरभाषी यज्ञप्रेमी, अतिथि सेवा, परिश्रमी, आदर्श महिला आदि विशेष गुण थे।

अब उनके मकान पर श्रद्धांजलि देने वालों का तांता लगा हुआ है, जिनमें प्रमुख श्री जगदीप डूडी पूर्व संसदीय सचिव राज० सरकार, श्री सन्दीप डूडी पूर्व चेयरमैन सहकारी समिति बैंक, महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही व श्री रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल हिसार (हरयाणा), नत्थूराम मान पूर्व सरपंच छानी बड़ी, श्री सुरेश बंसल सरपंच छानी बड़ी, भालसिंह डूडी गांव सूरतपुरा, मा० बलजीत आर्य झांसल, प्रिं० जगतसिंह आर्य आर्य स्कूल छानी बड़ी एवं समस्त स्टाफ, रामेश्वर लाल आर्य पूर्व प्रधान आर्यसमाज छानी बड़ी आदि पधार चुके हैं।

—माडूराम गोदारा, छानी बड़ी, जिला हनुमानगढ़ (राज०)

त्रिकालदर्शी हमारा प्राणप्रिय..... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहा जाता है। इसका अर्थ है कि भविष्य में जीवों के द्वारा कर्म किये जाने पर ईश्वर उनको जानता है। कर्म करने से पूर्व ईश्वर को उनके होने न होने का ज्ञान नहीं होता।

ईश्वर त्रिकालदर्शी है या नहीं वा किस प्रकार से है, इस पर महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश में प्रकाश डाला है। इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले उन्होंने जीव और ईश्वर, स्वरूप, गुण, कर्म और स्वभाव से कैसे हैं ? इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत किया है। यह भी जानने योग्य हैं, अत: इसे प्रस्तुत कर रहे हैं। वह लिखते हैं-'दोनों चेतनस्वरूप हैं। स्वभाव दोनों का पवित्र, अविनाशी और धार्मिकता आदि है। परन्तु परमेश्वर के सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय, सब को नियम में रखना, जीवों को पाप पुण्यों के फल देना आदि धर्मयुक्त कर्म हैं। और जीव के सन्तानोत्पत्ति उनका पालन, शिल्पविद्या आदि अच्छे बुरे काम हैं।। ईश्वर के नित्यज्ञान, आनन्द, अनन्त बल आदि गुण हैं। और जीव के-

इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदु:खज्ञानान्यात्मनो लिंगामिति।। -न्याय सूत्र।

प्राणापाननिमेशोन्मेशजीवमनोगतीन्द्रियान्तर्विकारा: सुखदु:ख इच्छाद्वेशौप्रयत्नाश्चा-त्मनो लिंगानि।। -वैशैषिक सूत्र।

दोनों सूत्रों में (इच्छा) पदार्थों की प्राप्ति की अभिलाषा (द्वेष) दु:खादि की अनिच्छा, वैर, (प्रयत्न) पुरुषार्थ, बल (सुख) आनन्द (दु:ख) विलाप, अप्रसन्नता (ज्ञान) विवेक, पहिचानना ये तुल्य हैं परन्तु वैशेषिक में (प्राण) प्राणवायु को बाहर निकालना (अपान) प्राण को बाहर से भीतर को लेना (निमेष) आंख को मीचना (उन्मेश) आंख को खोलना (जीवन) प्राण का धारण करना (मन:) निश्चय स्मरण और अहंकार करना, (गति) चलना (इन्द्रिय) सब इन्द्रियों को चलाना (अन्तर्विकार) भिन्न-भिन्न क्षुधा, तृषा, हर्ष शोकादि युक्त होना, ये जीवात्मा के गुण परमात्मा से भिन्न हैं। इन्हीं से आत्मा की प्रतीति करनी, क्योंकि वह स्थूल (व भौतिक पदार्थ) नहीं है।

जब तक आत्मा देह में होता है तभी तक ये गुण प्रकाशित रहते हैं और जब शरीर छोड़कर चला जाता है तब ये गुण शरीर में नहीं रहते। जिसके होने से जो हों और न होने से न हों, वे गुण उसी के होते हैं। जैसे दीप और सूर्यादि के न होने से प्रकाशादि का न होना और होने से होना है, वैसे ही जीव और परमात्मा का विज्ञान गुण द्वारा होता है।"

इसके पश्चात् महर्षि दयानन्द प्रश्न उठाते हैं कि परमेश्वर त्रिकालदर्शी है, इस से भविष्यत् की बातें जानता है। वह जैसा निश्चय करेगा जीव वैसा ही करेगा। इस से जीव स्वतन्त्र नहीं और जीव को ईश्वर दण्ड भी नहीं दे सकता क्योंकि जैसा ईश्वर ने अपने ज्ञान से निश्चित किया है, वैसा व वही कर्म जीव करता है। इसका उत्तर महर्षि दयानन्द यह देते हैं कि ईश्वर को त्रिकालदर्शी कहना मूर्खता का काम है। इसलिए कि जो होकर न रहे वह भूतकाल और न होके होवे वह भविष्यत्काल कहाता है। क्या ईश्वर को कोई ज्ञान होके नहीं रहता तथा न होके होता है? इसलिये परमेश्वर का ज्ञान सदा एकरस, अखण्डित वर्तमान रहता है। भूत, भविष्यत् जीवों के लिए हैं। हां, जीवों के कर्म की अपेक्षा से त्रिकालज्ञता ईश्वर में है, स्वत: नहीं। जैसा स्वतन्त्रता से जीव करता है वैसा ही सर्वज्ञता से ईश्वर जानता है और जैसा ईश्वर जानता है वैसा जीव करता है। अर्थात् भूत, भविष्यत्, वर्तमान के ज्ञान और फल देने से ईश्वर स्वतन्त्र और जीव किंचित् वर्त्तमान और (भविष्यत्) कर्म करने में स्वतन्त्र है। ईश्वर का अनादि ज्ञान होने से जैसा कर्म का ज्ञान है वैसा ही दण्ड देने का भी ज्ञान अनादि है। दोनों ज्ञान उस के सत्य है। क्या कर्मज्ञान सच्चा और दण्डज्ञान मिथ्या कभी हो सकता है? इसलिये इस में कोई भी दोश नहीं आता।

हम समझते हैं कि ईश्वर के त्रिकालदर्शी होने विषयक स्थिति स्पष्ट हो गई है। हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं परन्तु अपने सभी पुण्य-पाप कर्मों के अनुसार पुरस्कार व दण्ड रूपी फल भोगने में ईश्वर की व्यवस्था से सुख व दु:ख पाते हैं। हम कुछ भी कर लें, कितना दान, पुण्य, धर्मानुष्ठान करें करायें, परन्तु किये हुए कर्मों के फल तो अवश्यमेव भोगने ही होंगे। **'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभ्।'** यदि ऐसा है तो क्यों न ईश्वरीय ज्ञान वेदों के अनुसार ईश्वरोपासना व यज्ञादि कर्मों को करते हुए हम अपने वर्तमान व भावी जीवन को सुखद बनाये और धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष को सिद्ध करें। गायत्री मन्त्र की तीन महाव्याहृतियों में से एक 'भू:' में ईश्वर को हमें प्राणों से भी प्रिय बताया गया है। आइये, हम उसे अपना प्राण प्रिय मित्र बनाकर वेदानुकूल निश्चिन्त जीवन व्यतीत करें जैसा कि महर्षि दयानन्द आदि ऋषि व विद्वानों ने किया था।

196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001
फोन 09412985121

गांव मंडौरा में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ तथा पौधारोपण का कार्यक्रम

दिनांक 26.07.2015 को गांव मंडौरा (सोनीपत) में स्वर्गीय ईश्वरसिंह दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी, सदस्य ग्राम पंचायत मंडौरा के शान्तियज्ञ के उपरान्त बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ तथा पौधा रोपण का कार्यक्रम रणवीरसिंह मान तथा सुखवीरसिंह दहिया आर्यसमाज तिलक नगर (रोहतक) की प्रेरणा से सम्पन्न हुआ। शान्तियज्ञ पर बोलते हुए सुखवीर सिंह ने यजुर्वेद के महामृत्युंजय मन्त्र-'त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि०' की व्याख्या करते हुए कहा कि मृत्यु के समय उन लोगों को दु:ख (भय) होता है जो जवानी तथा प्रौढ़ अवस्था में पाप करते हुए नहीं डरते, आखरी समय में अपने पापों को याद करके दु:खी होते हैं तथा जो जीवनभर धर्मयुक्त कार्य करते हैंतथा देश-समाज के लिए कुर्बानी देते हैं, वे मृत्यु से नहीं डरते। जैसे भगतसिंह, स्वामी दयानन्द। इसलिये मनुष्य ने धर्मयुक्त कर्म करते हुए उन तीनों कालों, लोकों के रक्षक ईश्वर की उपासना करते हुए पके हुए खरबूजे की तरह खुशबू फैलाते हुए संसार से जाना चाहिए।

इस अवसर पर स्वर्गीय ईश्वरसिंह व डॉ. दलेलसिंह वीसी चुरु राजस्थान के परिवार ने एक दलित परिवार को अपना पूरा संरक्षण देने का संकल्प लिया जिसके लिए दलित परिवार के घर पर साफ-सफाई करवाकर यज्ञ किया गया तथा कपड़े दिये गये। इस परिवार में बूढ़ी अपंग विधवा दादी एक अपंग विधवा मां तथा पांच कन्याओं एवं एक पांच साल का लड़का है जिसके लिए 500-500 रुपये की दो पेंशन तथा एक गेहूं की बोरी प्रतिमास तथा सभी बच्चों की पढ़ाई का प्रबन्ध करने का संकल्प लिया।

इसके उपरान्त गांव में पंचायत की भूमि पर डॉ. दलेलसिंह, संजय राठी (प्रधान पत्रिका हरियाणा), रणवीरसिंह मान, जयसिंह दहिया डिप्टी डायरेक्टर द्वारा त्रिवेणी तथा अर्जुन, जामुन के पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का आह्वान किया तथा पेड़-पौधों का महत्त्व बताते हुए तुलसी, मरवा आदि के पौधे बांटे तथा गांव की लाइब्रेरी में भी नीम-बड़-पीपल के पेड़ लगाए। इस कार्य में गांव वालों ने पूरा सहयोग दिया तथा आश्वासन दिया कि हम इन पेड़ों की पूर्ण देखभाल करेंगे।

इस अवसर पर परिवार-गांव-मोहल्ले के लोग काफी संख्या में हाजिर रहे। सर्वश्री होशियार सिंह, महेन्द्र सिंह, साहब सिंह, जगदीश, विजय सिंह, अनिल, कुलदीप, रामकिशन, रामकंवार, धर्मवीर, वजीर, प्रिंसिपल रणवीरसिंह, ठेकेदार, मास्टर बीरेन्द्र, फूलकंवार, पूर्व सरपंच जोगिन्द्रसिंह, वेदिका-रिद्धि तथा अन्य। इस कार्यक्रम के प्रेरक, संयोजक सुखवीर दहिया, तिलक नगर, रोहतक रहे जिन्होंने उपरोक्त कार्य विधिवत् सम्पन्न कराये।

—सुखवीर सिंह दहिया,
तिलक नगर, रोहतक

जन्म दिवस पर यज्ञ का आयोजन

दिनांक 5.8.15 को पुलिस में हवलदार श्री संदीपसिंह दुहन के सुपुत्र श्री विक्रम के 10वें जन्म दिवस पर हिसार सनसिटी के पीछे 101 नं० कोठी में यज्ञ का आयोजन किया गया। वैदिक विद्वान् आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी द्वारा यज्ञ किया गया। आचार्य जी ने बच्चे को आशीर्वाद देते हुए सदाचार व सुखी गृहस्थ पर विस्तार से विचार रखे। पं० परागराज शर्मा ने भी आशीर्वाद दिया। वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने बच्चे को पितृभक्त व राष्ट्रभक्त बनने तथा प्रभु से लम्बी आयु व अच्छे स्वास्थ्य की कामना की।

अन्य आशीर्वाद देने वाले श्री धूपसिंह पूर्व सरपंच कंवारी, श्री जगदीश पूर्व सरपंच इतेरा, चतरसिंह आर्य कंवारी, अरविन्द शर्मा, मंगाली, श्रीमती भरथो देवी, श्रीमती सीमा देवी, बेटी अनुपम, सन्दीप सिंह दुहन आदि उपस्थित थे। शान्ति पाठ के पश्चात् देशी घी का प्रसाद बांटा गया।

—नरेन्द्र आर्य, नलवा (हिसार)

वेदप्रचार मण्डल हिसार द्वारा यज्ञ व गोष्ठियों का आयोजन

चौ० चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के गृहविज्ञान महाविद्यालय में 4, 8, 15 को यज्ञ का आयोजन किया गया।

वेदप्रचार मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी द्वारा यज्ञ किया गया। डॉ. प्रमोद ने सैकड़ों लड़कियों को यज्ञ का महत्त्व व आध्यात्मिक उपदेश दिया। डॉ. प्रवीण पूनिया ने बच्चों को अनुशासन का पालन करने का उपदेश दिया। आचार्य जी का धन्यवाद किया।

वेदप्रचार मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य द्वारा 28.7.2015 को हिसार में विजय कुमार के घर सुन्दरनगर में यज्ञ किया गया। पंच महायज्ञों की सुन्दर व्याख्या की। हवलदार दयानन्द कर घर कृषि नगर हिसार में मण्डल के प्रधान श्री रामकुमार आर्य द्वारा 1.8.2015 को हवन किया गया। प्रधान जी ने सुखी गृहस्थ पर विचार रखे।

4.8.2015 को सायंकाल दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में पं० सत्यपाल आर्य (उ.प्र.) ने देशभक्ति के भजन सुनाए। डॉ. प्रमोद योगार्थी व अत्तरसिं स्नेही उपस्थित थे।

5.8.2015 को अर्बन एस्टेट 31 नं० कोठी में धूपसिंह पूर्व सरपंच के साथ स्नेही ने विचार गोष्ठी की। सायंकाल 13 सैक्टर हिसार में बृजभान मलिक एसडीओ के 484 नं० में वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने पाखण्डवाद के खिलाफ विचार रखे।

—कर्नल ओमप्रकाश आर्य, मंत्री
वेदप्रचार मण्डल, हिसार

नवनिर्मित यज्ञशाला का भूमि पूजन

हिसार। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार का दिनांक 10.7.2015 को डॉ. रमेश लिखा द्वारा यज्ञशाला का भूमि पूजन किया गया। सर्वप्रथम विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदमन्त्रों का पाठ किया। डॉ. साहब व स्नेही जी द्वारा एक तसला मसाला नींव में डाला गया। इस अवसर पर वरिष्ठ पत्रकार श्री देवेन्द्र उप्पल, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही संरक्षक वेदप्रचार मण्डल, श्री रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल, आर.एस. चुग, विद्यालय के आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी, कैलाशचन्द्र शास्त्री, ठेकेदार मेहता साहब, राजवीर आर्य, राजकुमार आर्य आदि उपस्थित थे। भूमि पूजन के बाद देशी घी के लड्डू बांटे गये। 60 वर्ष पहले बनाई गई यज्ञशाला को तोड़कर शानदार यज्ञशाला का निर्माण किया जा रहा है। लोग दिल खोलकर दान दे रहे हैं। फाग के दिन स्नेही व डॉ. प्रमोद योगार्थी ने डेढ़ लाख रुपये का दान इकट्ठा किया। —सन्तोष शास्त्री, दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक मा० रामपाल आर्य ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।